ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(2): 316-321
www.allresearchjournal.com
Received: 25-01-2019
Accepted: 28-02-2019

Dr. Mandira Gupta
Associate Professor, Department of Sociology, M.M.H. College, Ghaziabad, Uttar Pradesh, India

Correspondence Author:
Dr. Mandira Gupta
Associate Professor, Department of Sociology, M.M.H. College, Ghaziabad, Uttar Pradesh, India

वृद्ध जनों की समस्या एवं निराकरण

Dr. Mandira Gupta

सारांश
पिछले कुछ दशकों में पूरे विश्व में वृद्धों की जनसंख्या तेजी से बढ़ी है। वृद्धावस्था मानव विकास की ऐसी अवस्था है जिसमें उसकी इंद्रियां कमजोर हो जाती हैं तथा व्यक्ति की बहुत सी क्षमताएं घट जाती हैं। जिस कारण सामाजिक, आर्थिक शारीरिक एवं चिकित्सीय रूप से अपने परिवार पर आश्रित हो जाते हैं। और उन्हीं के संरक्षण व देखभाल में अपना जीवन व्यतीत करते हैं जिस कारण विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं प्रस्तुत अध्ययन वृद्धजनों की समस्याओं एवं उनके निराकरण के विषय में प्रकाश डालता है। इसके अंतर्गत वृद्धजनों की समकालीन स्थिति तथा उनसे विभिन्न प्रकार की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

कूट शब्द: वृद्ध जनों की समस्या, निराकरण, वृद्धावस्था मानव विकास

प्रस्तावना
भारत वह भूमि है जहां माता-पिता को देव तुल्य माना गया है। माता को पृथ्वी तथा पिता को आकाश समझा गया। माता-पिता वह वट वृक्ष होते थे जिसके छत्रछाया में परिवार के सभी सदस्य सुरक्षित अनुभव करते थे। भारतीय सामाजिक प्रणाली को उसके परंपरा, सामाजिक मूल्यों और संस्कृति के लिए जाना जाता है। उसी में से एक संयुक्त परिवार प्रणाली थी जहां परिवार के हर एक सदस्य अपने बुजुर्ग को उचित सम्मान व संरक्षण दिया करते थे। समय के प्रवाह के साथ सामाजिक और नैतिक मूल्यों में बदलाव आया। भौतिकवाद और बढ़ते औद्योगिकरण के कारण लोगों को रोजगार, शिक्षा और व्यवसाय प्रशिक्षण के लिए गांव से शहर की ओर पलायन करने को मजबूर होना पड़ा। परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन हुआ और एकल परिवार अस्तित्व में आने लगा।

आज एक तरफ जहां जगह का अभाव है वही अपनी व्यस्त जिंदगी की वजह से युवा वर्ग माता-पिता को अपने साथ रखने में कठिनाई महसूस करते हैं। वहीं दूसरी तरफ बड़े बुजुर्ग कोई नई पीढ़ी के साथ सामंजस्य बनाने में एक पीढ़ी का फासला आड़े आता है। युवा पीढ़ी वृद्धों को अपने स्वतंत्र जीवन में बाधक के रूप में देखते हैं। इनको भी आज के बदलते परिवेश व जीवनशैली पसंद नहीं है। इन्हीं सब से दोनों पीढ़ियों के बीच टकराव रहता है जिसकी वजह से बूढ़े बुजुर्ग परिवार से उपेक्षा के शिकार होते हैं। पढ़े लिखे लोग लगभग शहरों और नगरों में बसने लगे। शुरू-शुरू में शहरों और नगरों में रोजगार की विवशता के कारण बसने वाले लोग अपने-अपने गांवों में जाकर वहां रहने वाले घर-परिवार के बुजुर्गों का हाल-चाल पूछ लेते थे। धीरे-धीरे अपने गांव को भूलने लगे।

उन्होंने अपने रोजगार के तहत नगर को ही अपना स्थाई बसेरा बना लिया। कुछ युवा जन अपने बुजुर्गों को अपने साथ शहर ले आए। एक और तो यह बुजुर्ग शहर की संस्कृति के साथ अपना तालमेल नहीं बिठा पाए दूसरी ओर उनकी संतानों के पास उन्हें उपलब्ध कराने के लिए भावनात्मक संरक्षण की गुंजाइश नहीं थी। यह दोहरे स्तर पर उपेक्षित होने लगे। उनके बच्चों को गांव वापस लौटने की कोई संभावना नहीं थी क्योंकि वह पूरी तरह से शहरी जीवन के अभ्यस्त हो गए थे। इनमें से अधिकांश बुजुर्गों के लिए भी इनकी संतानों के पास ना तो समय था और ना अपनापन। कुल मिलाकर बुजुर्गों को उनकी संतानों में अपने घर परिवार के हाशिए पर डाल दिया। जिन बुजुर्गों की आर्थिक स्थिति किसी कारण ठीक थी अर्थात उनकी जेब में अपनी संतानों को देने के लिए कुछ था उनका तो थोड़ा-बहुत मान-सम्मान उनके परिवार के सदस्य करते थे। कुल मिलाकर गांव और शहरों में रहने वाले बुजुर्गों की स्थिति लगातार दयनीय हो रही है। बुजुर्गों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने वाली संयुक्त परिवार की प्रणाली तो लगभग समाप्त ही हो गई है। उसके समानांतर सामाजिक सुरक्षा की कोई अन्य व्यापक व्यवस्था विकसित नहीं हुई। इस कारण वृद्धों का जीवन लगातार विषम से विषम होता जा रहा है।

सामाजिक संरचना में हुए इस बदलाव का विकल्प कुछ लोग वृद्धआश्रम में ढूंढते हैं। दुनिया के बहुत से विकसित देशों में ऐसे आश्रम को सामाजिक सुरक्षा का पर्याय मान लिया गया है, जबकि स्थिति ऐसी नहीं है। इन आश्रम में वृद्धों को भोजन, आश्रय और चिकित्सा सुविधाएं तो मिल जाती हैं, लेकिन भावनात्मक संबल नहीं। आश्रम में रहने वाले अधिकांश वृद्ध बेबस होकर अपनी मौत का इंतजार करते रहते हैं। जो संतान उन्हें यहां छोड़कर जाती है उनमें से अधिकांश पीछे मुड़कर भी इनकी ओर नहीं देखते।

आज विश्व भर में चिकित्सा के क्षेत्र में हो रही प्रगति एवं आर्थिक व सामाजिक विकास के कारण मनुष्य की औसत आयु पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गई है। इसके फलस्वरूप लगभग सभी देशों में बड़े-बूढ़ों की संख्या में वृद्धि हो रही है। स्वतंत्रता के समय हमारे देश में वृद्ध जनों की संख्या करीब 2 करोड़ थी। वर्तमान में 60 वर्ष से अधिक उम्र के 7 करोड़ लोग हैं। इनमें 48। 2% महिलाएं हैं। 90% वृद्ध असंगठित क्षेत्र में रहते हैं। 60 वर्ष की आयु में कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है। 80% ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं। 40% गरीबी रेखा से नीचे रह रहे हैं। 60 वर्ष से अधिक उम्र के 55% महिलाएं विधवा है जो लगभग एक करोड़ 90 लाख के करीब है। 60% से अधिक उम्र के 73% अनपढ़ है। निर्भरता अनुपात इस समय 12।26% है। 2016 तक 14।12%% हो जाने का अनुमान है।

1991की जनगणना के अनुसार भारत में वृद्धों की जनसंख्या भारत में 7।1% थी। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है 2025 ईस्वी में इनकी जनसंख्या 12।3 प्रतिशत भी हो जाएगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO) के द्वारा संप्रेषित सिद्धांत "2000 AD तक सभी के लिए स्वास्थ्य" को भारत में स्वीकार किया गया था, साथ ही वृद्ध विश्व परिषद (WAA) के नारे "बरसों जिंदगी बढ़ाओ" लाना है। 1982 विएना में WAA की प्रथम बैठक जोकि 22 वर्षों की सलाहकार समिति के रूप में हुई थी भारत उसका सदस्य था। बैठक में पारित नीतियों और कार्यक्रमों को विश्वव्यापी, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर क्रियान्वित किया जाना है। जिससे कि बीसवीं शताब्दी में प्राप्त की गई उन्नति का आगामी वर्षों में अधिकतर प्रयोग किया जा सके। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1999 में "वृद्ध लोगों को अंतर्राष्ट्रीय वर्ष" (इंटरनेशनल ईयर आफ ओल्डर पर्सन) के रूप में मनाया गया था। इसका उद्देश्य सामान्य जनता में वृद्धावस्था की समस्याओं के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा एक ऐसे समाज के निर्माण हेतु कदम उठाना था जिसमें युवाओं एवं वृद्धों में परस्पर सहयोग हो तथा दोनों एक दूसरे के देखरेख एक प्रकार से कर सकें।

वृद्धावस्था

वृद्धावस्था जीवन का यथार्थ है क्योंकि यह अवस्था अधिकांश मनुष्य में आती है। किसी भी समाज की जनसंख्या में का वृद्धों अनुपात उसके विकास को काफी सीमा तक प्रभावित करता है। सामान्यता "वृद्ध उस व्यक्ति को कहा जाता है जिसने 60 वर्ष की आयु पूरी कर ली है"। कुछ विद्वानों ने की वृद्धों दो श्रेणियों में विभाजित किया है। युवावृद्ध (60-75), वर्ष के मध्य। वरिष्ठ वृद्ध (75 से अधिक)। भारत में वृद्ध लोगों को अब वरिष्ठ नागरिक अथवा सीनियर सिटीजन कहा जाने लगा है। पिछले कुछ दशकों में पूरे विश्व में वृद्धों की जनसंख्या तेजी से बढ़ी है। इसका प्रमुख कारण शिशु मृत्यु दर में कमी, चिकित्सा विज्ञान में प्रगति तथा स्वास्थ्य देख-रेख में सुधार संबंधी सुविधाओं में वृद्धि है। भारत में भी की वृद्धों औसत आयु बढ़ गई है तथा पिछले कुछ वर्षों के मुकाबले में उनका स्वास्थ्य भी बेहतर होता जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख के माध्यम से हमने वृद्धजनों की समकालीन स्थिति तथा उनसे विभिन्न प्रकार की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है जिससे वे ग्रस्त तथा

उन समस्याओं के निराकरण के लिए सुझाव प्रस्तुत किया है।

उपकल्पना

1. आर्थिक रूप से संपन्न वृद्ध जनों को कम समस्या का सामना करना पड़ता है।
2. मध्यम और निम्न वर्ग के वृद्धजनों को आर्थिक कमी के कारण सुख सुविधा से वंचित रहना पड़ता है।

प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक है। प्रस्तुत शोध लेख में द्वितीयक सामग्री का उपयोग किया गया है।

देश में 90 के दशक में वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई और एक अलग तरह के संस्कृति, मूल्यों एवं संबंधों को जन्म दिया, जिसमें व्यक्तिकवाद, उपभोक्तावाद, भौतिकवाद आदि को बढ़ावा मिला। इसमें वर्तमान समाज के परिवारों की मजबूत सामाजिक संस्था तथा सामाजिक संबंधों एवं नैतिक मूल्यों को प्रभावित किया। समकालीन समाज में एकाकी परिवारों में वृद्धि, अधिक आयु में विवाह, महिलाओं में एकाकी एवं अविवाहित रहने की प्रवृत्ति तलाक जैसे मुद्दे तेजी से उभरे हैं। साथ ही वृद्ध जनों के प्रति दुर्व्यवहार उत्पीड़न शोषण आदि से संबंधित समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

वृद्धावस्था मानव विकास की ऐसी अवस्था है जिसमें उसकी इंद्रियां कमजोर हो जाती हैं तथा व्यक्ति की बहुत सी क्षमताएं घट जाती हैं। जिस कारण सामाजिक, आर्थिक शारीरिक एवं चिकित्सीय रूप से अपने परिवार पर आश्रित हो जाते हैं। और उन्हीं के संरक्षण व देखभाल में अपना जीवन व्यतीत करते हैं जिस कारण विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हो जाते हैं जो मुख्य रूप से निम्नलिखित है।

शारीरिक समस्या

वृद्धावस्था शारीरिक पतन का काल है। उम्र के साथ शरीर धीरे-धीरे शारीरिक रूप से शिथिल होने लगता है। शारीरिक स्थिति वंशानुगत एवं रहन-सहन के तौर-तरीके पर भी निर्भर है। जीवन के उतार-चढ़ाव। दोषपूर्ण आहार व कुपोषण, संक्रामक, नशा, अपर्याप्त आराम, भावनात्मक तनाव, अत्यधिक काम, एवं पर्यावरण के कारण निम्न समस्याओं से ग्रसित होना पड़ता है। जैसे कैल्शियम और विटामिन डी की कमी के कारण गठिया घुटनों में दर्द एनीमिया उच्च रक्तचाप कोलेस्ट्रोल मधुमेह आंखों में मोतियाबिंद दांत की समस्या पाचन क्रिया संबंधित समस्या अनिद्रा किडनी इत्यादि छोटी बड़ी बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं।

मनोवैज्ञानिक समस्याएं

मानसिक विकारों का वृद्धावस्था में गहरा संबंध है। वृद्धजन मानसिक अवसाद के लिए अति संवेदनशील होते हैं। वृद्ध जनों ने अपनी उपेक्षा के प्रति कुंठा उनका उनके भीतर अनेक शारीरिक व मानसिक व्याधियों को उत्पन्न करती है। एक मां बाप अपने बच्चों के लिए बिन करें अनेक कुर्बानियां देते हैं लेकिन वही बच्चे बड़े होकर अपने मां-बाप को अनदेखा करता है तो उस बेचारे मां-बाप को अपना जीवन बोझ लगने लगता है। शारीरिक पीड़ा से भी ज्यादा बुढ़ापे में मानसिक पीड़ा बड़ा है जिस कारण उन्हें मानसिक अवसाद, कमजोरी थकान, चक्कर आना, सिर दर्द, भूलने की बीमारी, भ्रम व संदेह करने की प्रवृत्ति जैसे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। मानसिक क्षमता में गिरावट उन्हें निर्बल बनाती है। उन्हें अपने आप पर भरोसा नहीं है, आत्मबल गिर जाता है, निर्णय लेने की क्षमता धीमी पड़ जाती है। इसके अलावा बुढ़ापे में जीवनसाथी की मृत्यु होने, अकेलापन व अलगाव की भावना पैदा करती है वृद्धलोगों के परिवार के सदस्यों का रुखा व्यवहार व लापरवाही उन्हें भावनात्मक समस्या पैदा करता है।

सामाजिक समस्या

वृद्धावस्था में सामाजिक क्षति बहुत ही नुकसानदायक होता है। सामाजिक जीवन से जुड़े काम जैसे दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलना-जुलना, पारिवारिक उत्सव में भाग लेने में गतिरोध उत्पन्न होने पर वह अपने को समाज से कटा अनुभव करते हैं। कमजोर स्वस्थ का हवाला देकर उन्हें सामाजिक गतिविधियों से उनकी भागीदारी को प्रतिबंधित करने से घर ही उनके सामाजिक जीवन का केंद्र बन जाता है। जो परिवार के सदस्यों के साथ पारस्परिक संबंधों तक ही सीमित हो जाता है। वह अकेले अलग-थलग पड़ जाते हैं जिसे वे अपने आप को असहाय समझने के कारण गंभीर स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त हो जाते हैं।

आर्थिक समस्या

सेवानिवृत्ति के परिणाम स्वरुप आमतौर पर आय का नुकसान होता है। और बुजुर्गों को मिलने वाली पेंशन आमतौर पर जीवन-यापन की लागत को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होती है जो हमेशा बढ़ती रहती है। वह अपनी कमाई, भविष्य निधि ज्यादातर बच्चों की शिक्षा दीक्षा, परिवार के भरण-पोषण, शादी-ब्याह पर खर्च करते हैं तो उनकी बीमारी के निदान और उपचार वृद्धावस्था के लिए अधिक वित्तीय समस्या पैदा करें देती है। यदि उन्हें पेंशन मिल रहा है तो या बच्चे उनके ऊपर खर्च करते हैं तो ठीक है वरना उन्हें आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है।

आज की युवा पीढ़ी अपने मन में आधुनिक सुख-सुविधाओं की चाहत रखकर भौतिकता की अंधी दौड़ में फंसी हुई है। "हम दो हमारे दो" तक ही सीमित रख कर वृद्ध जनों को अपने परिवार की परिधि से बाहर रखना चाहती है। यही नहीं बल्कि वृद्ध जनों को अपनी निजी जिंदगी में बाधा भी समझती है। शहरी संस्कृति में पलने वाले परिवार के सभी सदस्य एक ही डाइनिंग टेबल पर बैठकर साथ साथ भोजन करते हैं परंतु वृद्धजन अलग भोजन करते हैं। उन्हें अपने परिवार से अलग-थलग क्यों समझा जाता है ? उनकी बीमारी के इलाज की अनावश्यक व्यय क्यों माना जाता है? यह विडंबना ही है। वृद्धजनों की देखभाल एवं संरक्षण का दायित्व परिवार रूपी संस्था पर है लेकिन परिवार की अवहेलना के कारण ही वृद्धजनों की समस्या का उदय हुआ। वृद्धजनों की उपरोक्त समस्याओं को अवगत होने के उपरांत आधुनिक भारतीय समाज में समस्याओं के पीछे मूल निम्न कारणों को उजागर करने का प्रयास किया है जो मुख्य रूप से इस प्रकार हैं।

संयुक्त परिवार का विघटन

पहले संयुक्त परिवार अधिक होते थे। परिवार की बागडोर वृद्धजनों के हाथ में होती थी वहां मुख्य मामलों में उन्हीं की सलाह व निर्णय मान्य होता था। शरीर से अशक्त होते हुए भी वे दरवाजे में खड़े रहकर पहरेदारी करते थे। उनकी नजर छोटे बच्चों पर भी रहती थी वह छोटे बच्चों की कहानियां सुनाते थे। इससे बच्चों का मनोरंजन होता था और दूसरी तरफ उनकी नैतिक शिक्षा मिलती थी। पूरे परिवार के सदस्य उनका इज्जत करते थे। उनकी आज्ञा मानते, उनकी देखभाल करना, उनकी सुख सुविधा का ध्यान रखना सभी सदस्यों के सम्मिलित जिम्मेदारी होती थी। एक निश्चित आयु सीमा के बाद वृद्धजन भले ही हमारे लिए आर्थिक रूप से बोझ बन गए हैं परंतु वे हमारी बुजुर्ग संपदा है। उनके लंबे जीवन के व्यवहारिक अनुभव आज की युवा पीढ़ी के लिए पथ प्रदर्शक है। वृद्धावस्था जीवन के अपरिहार्य समस्या उम्र बढ़ने के साथ समस्या विशेष तौर पर 65 साल की उम्र के बाद दिखाई देती है जो की अनेक समस्याओं से पीड़ित है। आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। एकाकी परिवार पनप रहे हैं। वृद्धजनों का महत्व कम होता जा रहा है। यदि एक पिता के 3 पुत्र हैं तथा तीनों अलग-अलग परिवार बचाना चाहते हैं तो हर पुत्र माता-पिता को देखरेख की जिम्मेदारी दूसरे पर थोपना चाहता है। ऐसी स्थिति में माता-पिता कभी-कभी बोझ बन जाते हैं।

आधुनिकता अपनाने की चाह

शहर के लोग तो आधुनिकता की आड़ में फंसे ही है, गांव के लोग भी इसकी परिधि में आते जा रहे हैं। अब एकाकी परिवार आधुनिक स्वेच्छाधारी जीवन बिताने की ललक बढ़ रही है। वृद्धजनों की परंपरा वादी विचार, आधुनिक जीवन शैली अपनाने के मार्ग में रोड़ा समझे जाने लगे हैं। देर रात तक टीवी देखना, पार्टियों में आना-जाना, फैशन अपनाना आदि ऐसे प्रचलन है जो वृद्धजनों को रास नहीं आते। युवा पीढ़ी वृद्धजनों को दूर रखना चाहती हैं।

आर्थिक बोझ

आज हर परिवार बढ़ती हुई महंगाई से दबा हुआ है। साधारण परिवार को अपने गृहस्ती चलाना और बच्चों को पढ़ाना मुश्किल हो रहा है। ऐसे हालात में धनउत्पादक वृद्ध जनों को एक अनावश्यक बोझ के रूप में देखा जाने लगा है। इसके फलस्वरूप होने उन्हें परआश्रित स्थिति में उपेक्षित जीवन जीने को विवश होना पड़ता है।

नैतिकता का पतन

आज समाज में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण नैतिकता का पतन होता जा रहा है। जिन वृद्ध जनों ने हमें जन्म दिया, हमारा पालन-पोषण किया, हमें बड़ा किया, हमारी शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था की, उसकी समुचित देखभाल करना, उनकी सुविधाओं का ध्यान रखना हमारा नैतिक कर्तव्य होना चाहिए। परंतु नैतिकता के अभाव के कारण समाज में वृद्धजनों की सेवा भाव विलीन होते जा रहे हैं।

संबंधित अध्ययन

देश में समय-समय पर वृद्धजनों के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अनेक अध्यक्ष संपादित किए गए हैं जो इस प्रकार हैं।

शर्मा ने असम राज्य के गोहाटी में निवासरत विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति में वृद्धों के अध्ययन में पाया कि सभी सामाजिक-आर्थिक समूह की मनो-सामाजिक समस्याओं के प्रकृति में महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। साथी अकेलापन। वित्तीय असुरक्षा जीवन एवं संपत्ति सुरक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं सभी में हैं।

शुक्ला ने लखनऊ शहर के वृद्ध जनों की स्वास्थ्य समस्याओं पर किए गए अध्ययन में पाया कि अधिकांश वृद्धजन मधुमेह एवं नेत्र रोग से पीड़ित थे। इसके अतिरिक्त टीवी, कैंसर, हाइपरटेंशन, अर्थराइटिस आदि की भी समस्याएं सामान्यता वृद्धजनों में पाई गई।

चक्रवर्ती ने त्रिपुरा के वृद्धजनों पर संपादित अपने शोध अध्ययन में पाया कि सेवानिवृत्त वयोवृद्ध आर्थिक, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से आप निर्भर है जबकि समान आयु वर्ग की विधवा वृद्ध महिलाएं सभी प्रकार से दूसरों पर निर्भर है। साथी यह भी बताया कि

वृद्ध जनों से संबंधित सामाजिक आर्थिक कारको की तुलना में मनोवैज्ञानिक कारको का गहन अध्ययन आवश्यक है।

शर्मा एवं चौधरी असम राज्य में निवास करने वाले 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के पुरुष एवं महिलाओं की समस्याओं एवं देखभाल की स्थिति के अध्ययन में पाया की बच्चे अपने वृद्ध ब्माता-पिता की देखभाल तो करते हैं लेकिन वृद्धजनों में देखभाल संतुष्टि का स्तर कम है तथा वृद्ध जन स्वास्थ्य एवं आर्थिक समस्याओं का सामना अधिक करते हैं।

हेमवती व स्वरूपरानी ने आंध्र प्रदेश के चित्तूर जनपद के मन्नापल्ली गांव में निवासरत वृद्धजनों की समस्याओं का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया है जिसमें वृद्ध पुरुषों में शारीरिक एवं आर्थिक समस्याएं अधिक है जबकि वृद्ध महिलाओं में मनोवैज्ञानिक समस्याओं की अधिकता है तथा सामाजिक समस्याएं दोनों प्रकार के वृद्धजनों में लगभग सामान है।

अंजू ने भारतीय समाज में वृद्धों की सामाजिक स्थिति एवं समस्याओं का अध्ययन द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किया है, जिसमें पाया कि पहले वृद्धजनों की संयुक्त परिवार में पर्याप्त सुरक्षा थी तथा वरिष्ठता की महत्ता के कारण परिवार में उत्तम स्थान भी प्राप्त था, लेकिन पश्चिमीकरण भौतिकता वादीएवं उपभोक्तावादी संस्कृति ने वृद्धजनों की स्थिति में परिवर्तन किया है जिससे अलगाव एवं अकेलेपन की समस्या में वृद्धि हुई है और उक्त समस्या के प्रमुख कारणों में उदासीनता, आश्रिता, शारीरिक अक्षमता एवं असमर्थता आदि है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) 2008 वृद्ध जनों के लिए वृद्ध आश्रम सचमुच ही अंतिम आश्रम के रूप में सहारा दे रहे हैं मगर इसके बावजूद डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार बुजुर्गों पर आनाचारण प्राया संस्थागत परिवेश जैसे नर्सिंग होम, आवासीय देखरेख संस्थाएं, चिकित्सालय व दिवसीय देखरेख केंद्र में होता है, कि कुछ अवस्था में वहां के कर्मचारी अनुशासन के नाम पर उन पर अतिसंरक्षण संबंधी नियम लागूकर संस्थागत दुर्व्यवहार करते हैं।

देश में वरिष्ठ नागरिकों के प्रति दुर्व्यवहार उपेक्षा की बढ़ती संख्या रिपोर्ट के साथ भारतीय अब अपने पारस्परिक पारिवारिक मूल्यों की बढ़-चढ़कर दोहाई नहीं दे सकते। बुजुर्गों के लिए काम करने वाली शैक्षिक संगठन के अनुसार 10 में से चार बुजुर्ग दुर्व्यवहार के शिकार हैं। या आघात पहुंचाने वाली बात यहां तक कि यह विचलित करने वाले आंकड़े पूरी तस्वीर पेश नहीं करते क्योंकि यह अनुमानित बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के 6 में से केवल 1 ही मामला वास्तव में रिपोर्ट किया जाता है।

समस्याओं के निराकरण एवं सुझाव

अध्ययन के आधार पर कुछ विद्वानों समस्या के निराकरण के लिए सुझाव प्राप्त हुए हैं। जो इस प्रकार हैं आभा चौधरी अनुग्रह दिल्ली आधारित बुजुर्गों के लिए कार्यरत एनजीओ संस्थापक सचिव मानते हैं कि "सामुदायिक संवेदनशीलता की आवश्यकता है और यदि समाज में अधिकांश लोग सहयोग ना दें तो, बुजुर्गों को आपस में सहयोग करना चाहिए"।

सहृदय बुजुर्गइयत की भावना के उन्नयन में कार्यरत कर्मियों के अनुसार अब समय आ गया है कि वरिष्ठ नागरिकों को अपने सभी मामले अपने नियंत्रण में रखने होंगे। मेरी राय "बुजुर्गों को अपने बच्चों व समाज पर निर्भरता छोड़ देनी चाहिए"। दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल श्री तेजेंद्र खन्ना भी यह मानना है कि "वरिष्ठ नागरिकों को चाहिए कि एक दूसरे से मिले और अपने परिवार पर आश्रित ना रहे इसके अलावा, यदि उनके बच्चे उन्हें तंग करते हैं। तो उनको उन बच्चों को घर से निकालने में खींचना नहीं चाहिए।"

प्रवर्तन एजेंसी का मानना है कि बुजुर्गों के प्रति दूरव्यवहार एक ऐसा मुद्दा है जिसके समग्र रूप में समाज के सहयोग से सुलझाया जाना चाहिए। भूतपूर्व पुलिस उपायुक्त श्री अनिल शुक्ला का कहना है कि "दिल्ली पुलिस वरिष्ठ नागरिकों को पूर्ण सहयोग देती है लेकिन अंत में इस शहर को अपने वरिष्ठ नागरिकों के लिए अच्छा स्थान बनाना समाज की जिम्मेदारी है।"

बुजुर्ग लोगों को संतान के साथ माता-पिता ही नहीं बल्कि मित्र, सलाहकार बनकर हर कदम पर यथाशक्ति सहयोग देने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि संयुक्त परिवार का विघटन रुक सके।

संतानों को भी माता-पिता को यथोचित मान-सम्मान देते हुए उनकी आयु की गरिमा को ध्यान में देते हुए उनके अनुभव और ज्ञान का लाभ उठाते हुए परंपरा और आधुनिकता के बीच समन्वय स्थापित करते हुए सामंजस्य करने का प्रयत्न करना चाहिए।

वृद्धों को अंशकालिक रोजगार सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए। सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा ओल्ड होम्स में घर जैसा वातावरण तथा सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए।

निष्कर्ष

आज भौतिकवादी युग में वृद्धजन उपेक्षा व तिरस्कार का शिकार हो रहे हैं। वह न तो देव तुल्य माने जा रहे हैं और ना ही उन्हें सम्मान और अपनापन मिल रहा है जिसके वे हकदार हैं। जिन्होंने अपनी व्यस्ततम समय का हवाला देकर अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में डाल दिया है। वृद्धाश्रम में वृद्ध जनों सिर को छुपाने के लिए

छत, पेट भरने के लिए रोटी, पढ़ने के लिए अखबार, मनोरंजन करने के लिए टीवी तो मिल जाता है लेकिन भावनात्मक सुरक्षा और संरक्षण नहीं मिल पाता। उनकी शेष शारीरिक और मानसिक शक्ति के उपयोग की कोई व्यवस्था वहां लगभग नहीं होती। इसलिए एनजीओ को इनकी व्यवस्था करनी चाहिए तथा बच्चों को भी समय-समय पर उनसे मिलते रहना चाहिए।

किसी भी समस्या का निराकरण मुश्किल नहीं है, आवश्यकता है केवल सकारात्मक सोच की। युवा वर्ग वृद्ध जनों को आर्थिक बोझ न समझें। समाज के हर व्यक्ति को "पित्रदेव भव:- मातृदेवोभाव:" का सिद्धांत अपनाना चाहिए। वृद्धजनों की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। आज हर कोई श्रवण कुमार को इसलिए जानता है क्योंकि उसने सच्चे मन से अपने माता-पिता की सेवा की थी। आज की युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। केवल प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर को "वृद्ध दिवस" मनाकर पल्ला नहीं झाड़ सकते। वृद्ध दिवस मनाना तभी सार्थक है जब हम वृद्ध जनों को उचित मान-सम्मान दे एवं उनकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखें। उनको किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव ना होने दें। इससे हम नकार नहीं सकते कि आज हम जिस स्थिति में है उसमें मां-बाप का भी श्रेय है और आज जो युवा है आने वाले वर्षों में उन्हें भी उसी दौर से गुजरना पड़ेगा। इसलिए सकारात्मक सोच अपनाएं तथा वृद्धजनों की सुरक्षा व संरक्षण प्रदान करने का संकल्प लें। "जब जागो तभी सवेरा"।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए नई परिस्थितियों के साथ अपने को ढालना ही कल्याणकारी होता है। वृद्ध जनों को भी समाज में आए परिवर्तनों के साथ ताल-मेल बैठाना पड़ेगा। कुछ पुराना छोड़ना पड़ेगा कुछ नया अपनाना पड़ेगा। वृद्ध जनों को भी चाहिए समझदारी दिखाते हुए युवा पीढ़ी के काम-काज वह तौर-तरीकों में हस्तक्षेप ना करें। बुढ़ापा जीवन का विश्रांति कॉल है। घर-परिवार के उलझन में दिमाग खफाना अनावश्यक है। पारिवारिक जिम्मेदारी बेटे-बहू को छोड़कर तनाव रहित जीवन जीए तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार घर-गृहस्ती के छोटे-मोटे काम करते रहें। इससे एक और शरीर का व्यायाम भी होगा दूसरी ओर घर में शांति भी रहेगी। ऐसा नहीं है कि सभी बच्चे अपने वृद्ध जनों को अनदेखा करते हैं। कुछ ऐसे भी परिवार हैं जो अपने माता-पिता को बहुत आदर से और अपने साथ रखते हैं, उनकी देखभाल भी सही तरीके से करते हैं लेकिन उनकी संख्या कम है। इसलिए सरकार एवं समाज को वृद्ध जनों के संपूर्ण संरक्षण व सुरक्षा के लिए बहुआयामी रणनीतियां तैयार करके शीघ्र प्रभावशाली कदम उठाने की आवश्यकता है जिससे भारतीय समाज में फिर से गरिमापूर्ण सम्मान प्राप्त हो सके।

Refrences

1. Sharma C. Social and psychological aspects of problem of the elderly: A case study in Guwahati, Assam. Kumar Das Institute of Social change and development Guwahati Assam; c2004.
2. शुक्ला, अभिषेक कुमार, वृद्धावस्था की स्वास्थ्य समस्याएं, हॉस्पाइस सोशल वेलफेयर सोसाइटी, लखनऊ, 2007
3. Chakravarti A. Elderly person of Tripura: An Empirical Study in Majumdar, Chandrika, B and Saha P(Ed) Aging in North East India, volume-4 for Akansha Publishing House, New Delhi, 2008, P. 47-57.
4. बहुगुणा नितिन जुगरान,: बच्चों के जुल्म के शिकार: बुजुर्ग समाज कल्याण: वर्ष 54 अंक 3 अक्टूबर 2008. p. 18-19.
5. Sharma C, Chaudhari B. Problem of Elderly and Their Care Journal of Human Ecology. 2011;36(2):145-151.
6. Hemwati U, Swarooprani B. Problems Faced By Elderly According to Gender In Rural Areas of Chittoor District, International Journal of Social Sciences and Management. 2016;3(01):65-67.
7. अंजू, वृद्धों की सामाजिक स्थिति एवं समस्याएं - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन द रिसर्च। दिसंबर 2016;1(9):14-16.
8. सिंह, रूपेश कुमार, भारतीय समाज में महिला उत्पीड़न एवं कानून नई चुनौतियां एवं संभावनाएं राधाकमल मुखर्जी: चिंतन परंपरा, जनवरी- जून 2015;17(1):27-33.
9. भारत में वृद्धजन वार्षिक रिपोर्ट, सामाजिक सांख्यिकी विभाग, 2016, p. 39.